



381

❀ रहस्यचन्द्रिका ❀



जिसमें

श्रीपरब्रह्म परमेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द का
श्रीवृषभानुनन्दिनी राधिका और अन्य ब्रजगोपियों के
साथ शरद् रास करना अनेक मनोहारी
ललित छन्दों में वर्णन है

जिसको

श्रीमद्राधा कृष्णचरणारविन्द मल्लिन्द बुधजन मंडली
मंडन पंडितवरबख्शराम पांडे उपनाम सुजान कवि
पश्चिमोत्तरान्तर्गत बलिया नगराधीन हल्दी
ग्राम निवासी ने कृष्णचरणोपासक
हरिभक्तों के लिये निर्माण किया

प्रथमवार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी ,आई, ई)के छापेखाने में छपी
मार्च सन् १८९६ ई० ॥ ५० ॥

श्रीनिकुंजविहारिणेनमः

अथ श्रीमद्राधाकृष्ण विहार विषये ॥

रहस्यचन्द्रिका ग्रन्थ प्रारम्भः ॥

दोहा ॥

महा रसिक रस रासपाति ब्रज युवतिन सुख मूल । बंशीधर
बंशीधरे सदा रहो अनुकूल ॥ युवतिन राहस मांह तजि राधे संग
सुजान । अन्तर्द्धान स्वरूप सो रहे सदा हिय ध्यान ॥ हरि स्व-
रूपिणी हरि सरिस हरिगर डारेबांह । वृष हरिनन्दिनि राधिका
बसो सदा मन मांह ॥ मण्डल मण्डित तियन की मध्य माधुरी
वेष । नृत्यत हरि राधा युगल बाधा हरो विशेष १ ॥ छप्पै ॥ अ-
मल कमल सम वरण लखत षट पदजन हरसत । पगन कनक
अभरण मन हरण रतन सह सरसत ॥ चलत बजत स्वर श्रवण
छनद मन मदन मदन हर । लजत कलभ पथ चलत नखत सम
नखपद जनपर ॥ बर अमर सकल हर छन जपत समभक्त मज
अशरण शरण । मन अयन कसन कल धरत अस बरद अभय
नग धर चरण २ ॥ दोहा ॥ प्रथम कियो तप गोपिका ब्रजपति
कहँ पति हेतु । माघ न्हाय रविजा सलिल नित पूजैं वृषकेतु ॥
वासरेश बिनवैं बहुरि दोहाथन कहँ जोर । चक्रपाणि के पाणि
महँ ग्रहण पाणि हो मोर ॥ प्रेमार्थीन प्रवीन हरि निरखि प्रेम
गोपीन । करि लीला पट हरणको करयो हरण दुखपीन ॥ कह्यो
सदन सुख सबनते सदन सबन अबजाहु । रैन शरद महँ सहित
मम लहिहो जीवन लाहु ॥ तपत तपहि तुम सबनते भयो तृप्त
मम हीय । अब तप ताप दहो न तिय अपनो तन तपनीय ३ ॥

वसन्त तिलका छन्द ॥ आयो निशा सुखद शारद को जबैहै ।
 पुनो निहारि बरयाद भयो तबै है ॥ वृन्दानिकुंज सुखपुंज हरी
 सिधायो । जाको निहारि सुखमा अति मोद छायो ॥ दोहा ॥ अति
 पुनीत पावन परम श्री वृन्दावन धाम । जाकी महिमा आपुही
 श्रीमुख भाष्यो श्याम ५ ॥ इन्द्रवज्रा छन्द ॥ वृन्दानिकुंज अति
 सौम्य रूपं । सुर्वी हिरण्यादि प्रभा सुरूपं ॥ जेतो लता गुल्म नि-
 कुंज सोहे । चैतन्यता रूप सबे धरो है ६ चारो दिशा कुंज प्रभा
 सुहाही । ग्लौभानु कोटी लखिजा लजाही ॥ भाषे कहां लो सु-
 खमा बताई । आपे जहां श्याम रहे लुभाई ७ ॥ कवि० ॥ रहत
 प्रकाश सदा भास कोटि सूरहूते शीतल सुधाधर मरीचिका सो-
 भातहै । ठौर ठौर लतिका वितान तने वृक्षनिते परसि प्रफुलित
 सुभग सरसातहै ॥ बोलत विहंग कहूँ डोलत सृमर वृन्द गुंज म-
 धुपाली कहूँ कानन सुहातहै । रहत वसन्त सदा सुखमा सुजान
 लखि वृन्दावन धाम नन्द कानन लजातहै ८ ॥ सबैया ॥ शोभित
 मौल रसाल विशाल प्रसून सुगन्ध चहूँ दिशि साजे । डोलत
 धीर समीरसुजान सुगन्ध सने बन कुंज समाजे ॥ तैसिय चारु
 कलाधरकी द्युति पूरण शारद की निशि राजे । ताहि को भाषि सकै
 उपमाज्यहि मो मन मोहनआपु विराजे ९ ॥ छप्पै ॥ कहूँ तालीस
 तमाल ताल तज पत्रज सोहत । एला ललित लवंग लकुच कहूँ
 चित्त विमोहत ॥ बंजुल बकुल कदम्ब कुटज कदली कहूँ राजत ।
 पूर पराग प्रसून कहूँ अलियुत छवि छाजत ॥ कहूँ राजहंस कल
 हंस कुल नृत्यत मत्त मयूर गन । निशि शरद रास कान्हर समु-
 भि सबहि रह्यो है मुदित मन १० ॥ दोहा ॥ यद्यपि सरसिज
 शशि निरखि रैन माहँ सकुचात । तदपि रासरस हरि समुभि
 फूले निशिहुँ लखात ११ ॥ मोटनक छन्द ॥ वृन्दावन की लखि
 सुन्दरता । तैसी सुठिरैनि मनोहरता ॥ कीन्हो हरिरास विचार
 तबै । लाये तन भूषण भूरि सबै १२ सोहे वर वेष रतीपति सो ।
 देखे मन मोहतहै अति सो ॥ काछे कटि पीत पटम्बर सो । वंशी

तिमि सोहि रह्यो कर सो १३ माथे शिखि केर शिखरुड धरे ।
 मुक्तावलि बीचनि बीचजरे ॥ राजे तनरूप अनूप प्रभा ॥ मोहे हरिहूँ
 क्षारि जाहि अभा १४ ॥ छप्पै ॥ शरद कमल समरुचिर चलत
 लखि वारन लज्जत । रतन रचित अति मधुर मधुर स्वर नूपुर
 बज्जत ॥ अंकुश अम्बुज कुलिश सुरथघट छत्र बिरज्जत । पादज
 पर नख नव सपेद नख तन सम छज्जत ॥ विधि शम्भु शेष
 सेवित सुखद गोपिन उर आनंद करण । इमि रास हेतु राहस
 रसिक रह्यो रास मंडल चरण १५ ॥ दोहा ॥ याविधि नटवर
 सो बने कीन्हें सुभग स्वरूप । तबै सुरलिका करलियो मन्त्रमो-
 हनी रूप १६ ॥ सवैया ॥ मोहनि मन्त्र किधौ कलु तन्त्र कि यंत्र
 उचाटन केर कलासी । विभ्रम भाजन भूरि सुजान किधौ जड
 धेतन चेत प्रकासी ॥ है कलु पूरण प्रेम प्रभाविनि कै जग का-
 रिणि ज्यों कमलासी । कै जुरली उरली गुनकी मुरली हरिसंग
 निवासिनि खासी १७ ॥ मालिनीछन्द ॥ इमि सब गुण रूरी ।
 बांसुरी सप्त सूरी । धरिअधर कन्हाई । कुंज माहे बजाई ॥ सुनि
 शब्द रसाला । चित्त मोहै निहाला ॥ चर अचर खचारी । स्वस्थ
 भोगी बिसारी १८ ॥ दोहा ॥ षडज ऋषभ गन्धार अरु मध्यम
 पंचम मानि । धैवत बहुरि निषाद युत सप्त सूर पहिचानि १९
 सवैयाछन्द ॥ व्योम थक्योविधु को रथ बाहन धूम ध्वजा प्रगटी
 सितलाई । अम्बर माँह सुरासुर मोहित है कर पाहन सो रह्यो
 छाई ॥ कुंजन मोखग स्वस्थ सुजान भो सिन्धु समीर लही शिथि-
 लाई । शंकरहूँ को समाधि गयो छुटि बंशी जबै बनइयाम बजा-
 ई २० ॥ कवि० ॥ शंकर समाधि तज्यो रचना विरंचि तज्यो प-
 वन गवन तज्यो बारि तज्यो मेहको । अलका कुबेर तज्यो वैभव
 सुरेश तज्यो चारण किन्नर तज्यो बाद्यगीत नेहको ॥ नदिन प्रवाह
 तज्यो बाछरु पावन तज्यो सुरभी सुजान सुनि तजी सुधि देह
 का । बोलन विहंग तज्यो डोलन कुरंग तज्यो सुनत मुरलि धुनि
 गोपीतजी गेह को २१ ॥ अन्यच ॥ पलना कुमार छोडे पलंग

मतार छोड़े दूरि व्यवहार छोड़े सुधि भूली काजकी । हाथ में को
 हाथ में सुछोड़े मुख सुखही को थार में को थार छोड़े दशा यों
 समाजकी ॥ केतिक विहाल मृगजालसी पिराय ऐसो सुनत सु-
 जान धुनि बंशी ब्रजराज की । शोभासिन्धु श्यामपै सिधाईबाम
 अपगासी लहरि अवाज में जहान छोड़े लाजकी २२ ॥ बसन्त
 तिलका ॥ सोहे स्वरूप अति रम्य सुगौर नीके । पेन्हे सुपीत पट
 अंग मनो रतीके ॥ पै प्यावते सपदि बालक तल्पलाई । कान्हा
 समीप चन्द्रावलि कुंजधाई २३ है श्वेत चीर बपु गौर सुमध्यआ-
 छे । छूटे सुजान कच पास सुहात पाछे ॥ छोरे प्रयंक पियने-
 हन नेकुराखा । बंशी निनाद सुनि कुंज चली विशाखा २४ नी-
 लाब्जगात्र पटश्वेत जरी जरोहै । वक्षोज स्वच्छ घट स्वर्ण समान
 सोहै ॥ पै दूहते स्वरिक धेनु सबै बिहाई । वेगै निकुंज विधि का
 ललिता सिधाई २५ आदर्श स्वच्छ समगात्र प्रभा विराजे । डारे
 हराहरित चीर निचोल साजे ॥ कीन्हे कछू चित्रित अंग कछू
 बिहाई । बंशी निकुंज सुनि रवप्रमदा सिधाई २६ ॥ भुजंग प्रया-
 त ॥ खुले कंचुकी वेश त्यों केशछोरे । लयेपाणि आदर्श नीवीवि-
 थोरे ॥ रिते नैन एके इकै नैन आजी । शिला उर्मिलासी चली
 कुंज भाजी २७ गहे किंकिणी कंठ वाहे हुमेले । हरालंकमो आँ-
 गुरी मों पछेले ॥ सुबाँधे चुडामध्य मंजीर नीको । चली कुंज
 वृन्दा अनन्दे अतीको २८ ॥ कवित्त ॥ कोमल कमल सम अमल
 बदनसोहे कुन्दन समान तन सुखमा सुहाईहै । भूषण सकलअंग
 सोरहो शृंगार किये सोरहो कलाते कलानिधि छवि छाई है ॥
 सोहेश्वेत अम्बर सुजान पीत कंचुकीत्यों चन्द्रिका ललाट मध्य
 शोभा अधिकारि है । किये मुख रागअंगराग यों सुहाग भागभूरि
 भरे श्याम पहुँ राधिका सिधाई है २९ ॥ तथा ॥ कौशिली पुलि-
 न्दी श्रुति रूपा श्वेत द्वीपी सीता ऋषिरूपा यज्ञऋचा रमासखि
 प्यारीहै । मैथिली लोकालोक निवासिनी बैकुंठ वारी विष्णु-
 पुर वारीसु अदिव्या बरवारी है ॥ अप्सरा पुरांघ्रि नाग कन्यका व-

हिष्मती सुतल निवासिनी जो गोपी तनधारी है । अबध निवा-
 सिनी सहित लतारूप धारे रास हेतु पास रास पतिही सिधारी
 है ३० ॥ सोरठा ॥ को करि सकै बखान जो ज्यहि विधि ताविधि
 चली । पहुँची जहँ बन कान पट दश सहस कुमारिका ३१ ॥
 सवैया ॥ कुलकी कुलसी सब तोरिके लाज गुरुजन शंकहि पंक-
 रली । गृह काज बहाय तृणादिक सेपति नेहतरू तटसो सुदली ॥
 करि चिततरंग सुजान हिये परि पूरण जीवन पूर्णिली । सरि-
 ता सम गोपकुमारि सबै मिलिबे कहँ श्यामहि सिन्धु चली ३२
 कवि० ॥ प्रेमकी मूरतिन्यारी पंचभूत गोपीगन मानीना सुजान
 पति मातुपितु को कहे । राख्योकाहूभांति भौन विवश मरूकै जौन
 नटकी सुरति तिन्हें अटकि हियोरहे ॥ ध्यानधरि मोहन बिहाय
 तन बिरह ते दूसरो बपुष दिव्य देखते सबेगहे । भूषण सुचीर
 अंग साजे यदुबीर संग राहसमो सबही ते जाय आगुहीरहे ३३ ॥
 चामरछन्द ॥ देखि श्याम गोपिकान भीर सामुहेखडे । प्रेमतासबे
 निहारि प्रेमफन्द में पडे ॥ व्याज बाक्य श्यामयों कहो सबै गु-
 आलिते । यामिनी निकुंजका चली सबै उतालिते ३४ कीन्हि
 नाभलोपती तजेसुगेह मोसबे । दौरि कुंज आइयो कहा तुम्हें
 सुकी अबै ॥ बेदपंथ छोड़िके कुवेदपंथको गही । आपनो हिये
 बिचारि नेरु तो लखोसही ३५ जो कहँसुने निकुंज जानगेहको
 सबे । देहि सो निकारि बातहोयगो कहाँ तबे ॥ बादिह्यो चली
 सबै समाज काज खोयके । गेह मो तुम्हेंबिना बचा मरेंगे रोय-
 के ३६ ॥ सोरठा ॥ अबमेरो बच मानि सेवहु निज निज पतिहि
 गृह । बिलमकिये बहु हानि याते गृह अब जाहुसब ॥ दोहा ॥ श्रुति
 वेदनिकी बचनको सुनी नहीं कहँकान । पति तजि पर पतिको
 भजे रौरव होत निधान ३७ ॥ तोटक ॥ यहिते सबके पुनि सौह
 कहो । अपने गृहकी सब गैलगहो ॥ पतिकैसहु कूर कुरूपरहे ।
 त्यहिसेवहि तेतिय मुक्किलहे ३८ तियको जप योग विरागयहे ।
 पतिके पद सन्तत प्रेमरहे ॥ विपरीतचले तिय जो इनके । पर-

लोकहुँ लोकनसे तिनके ३६ ॥ कवि० ॥ शम्भुको सिखायो
 बैन सती ना स्विकार करी परिणाम ताको यज्ञ पावकमें जरी
 है । गौतमकी नारी सत्य मयवा बिगारी बनिपाहन रही सो मुनि
 बचन तेठरी है ॥ वृन्दाकी वृत्तान्त जग जानत सुजान सबे त-
 निक के चूकेप्राण पतिही को हरी है । ऐसी ऐसी सतिनकी कुमति
 ते क्षतिभई पतिवाक्य तजे कहो कौन ना बिगरी है ४० ॥ सु-
 न्दरीछन्द ॥ नेकुबिचारकरो हियमो अब । कारजनीच अहोकरती
 सब ॥ देखत कोउ तुम्हें इतआवत । कोरि प्रकार कलंक लगाव-
 त ४१ सत्य कलंक वृत्तान्त अहेमन । कारज रात्रि कहां चलि-
 बो बन ॥ निष्ठुर बैन कह्यो जबयों हरि । श्रौण सुने तिय नैनगयो
 भरि ४२ ॥ शार्दूलविक्रीडितछन्द ॥ बाला बैनमुरारि निष्ठुर सुनेयों
 दूंदफन्देपरी । देखेताहि विचित्र चित्र गति भो बोले न कोऊ
 जरी ॥ भाष्यो जो हरि कष्ट बैन तियते सो भेद जानी नहीं ।
 ताते बालविहाल जाल परिके ठाढ़ी ठगीसी रहीं ४३ ॥ सौर-
 ठा ॥ उठोहियो अतिपीर हैव्याकुल बिलखीं सबे । बहुरिहिये
 धरि धीर बोलीं हरिसों विनययुत ४४ ॥ कवि० ॥ इन्दिरा के
 मन्दिर निवास पति बसुधाको बसुधाको बिपति हरैया सबै गा-
 वही । रमानाथ रमण करैया भूरि भोगिनी को तुमते सुजान परे
 पति काहिपावही ॥ होत उपपतिनाम पतित बिचारो तोपै पर-
 दार प्रिय काहे बिरद बोलावही । हौतो जुपतित तुमपावन प-
 तित कहो ऐसो पतिसेवैकौन पतित कहावही ४५ ॥ दोहा ॥ जो
 तुमहरि परदार प्रिय होंपरपत्नी साँच । जस काछोगे काछनी तस
 नाचोंगीनाच ४६ ॥ संयुताछन्द ॥ सुनिये हरी करुणानिधी । हमग्वा-
 रिग्वालि सबैबिधी ॥ कहँ कर्म धर्म सुनावही । हमताहि जानि न
 पावही ४७ हरि कर्म भर्म तिन्हें लगे । जिन लोकरीतनि में पगे ॥
 हमतो सबेतजि बासना । पदकंजकीन्हि उपासना ४८ ॥ बन्धु
 छन्द ॥ सोकत निष्ठुर होतमुरारी । जानिहमें सबभांति गुवारी ॥
 मोहिंहियो निज पासबुलाई । धर्म बताय दुरावत साँई ४९ ये

तुमको करना भलनाहीं । हो तुमबत्सलभक्त सदाहीं ॥ मैकछुपाप
 न पुण्यहिजाने । केवल रावरि हाथधिकाने ५० मन्दमहा मुसु-
 कानतिहारी । मोहिलियो हियमो गिरिधारी ॥ सो तव त्यागि
 कहो कहँजावे । कातुमरो सम दूसरपावे ५१ ॥ सोरठा ॥ मनबच
 कर्म मुरारि मैदासी तव चरणकी । सोपदकंज बिसारि कहो कौन
 पतिको भजे ५२ ॥ दोहा ॥ तुम रचना विधि सहित ही अरु रचना
 विधि माहिं । कहो काहि मों रमतनहिं काको तुम पति नाहिं
 ५३ ॥ सबैया ॥ जे पदध्यावत शंकर से सुर सिद्ध मुनीशन ध्यान
 लगावे । नारद शारद शेष शुकादिक ध्यावत जे पद मोदबढावे ॥
 श्रीकमला उरवास सुजान जिन्हें जन जानि चऊ फलपावे । सो
 तुमरो पद पंकज नाथ अनाथिनिछोड़ि कहो कितजावे ५४ ॥
 उपेन्द्रबजाछन्द ॥ दयानिधे जोन दया करोगे । सुदोष जो चित्त
 कछू धरोगे ॥ विहाय हैं निष्ठुर जो रहोगे । कृपानिधी नाम सुक्यों
 लहोगे ५५ इन्द्रबजा छंद ॥ जो बैन मेरो हरि नासुनोगे । औरे
 जुपै चित्तकछू गुनोगे ॥ तो सत्यही सौंह कहोंतिहारी । दों प्राण
 त्यागी यमुना मभारी ५६ मोपै गृहे जात नहीं बनेगो । कोलोक
 की लाज हियो सनेगो ॥ आयो इते संग जुपैन लैहो । ताते मतो
 प्राण निकारि दैहो ५७ ॥ सबैया ॥ प्रेमहि के बश दयाम सुजान
 बिकात हैं प्रेमहिते बिन मोले । देखिय प्रेमबढ़प्पन त्यों अबनी
 महँ ईश्वर आपु कलोलें ॥ हैं जबलोहिय प्रेम नहीं हरिताहि
 समीप न आवत तोलें । सोलखि गोपिनप्रेमहियो करुणाकरके
 करुणाकरबोलें ५८ ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ तजोगोपिका सर्व दुःखा
 दिही को । कियो हासलीन्हों परिच्छासभी को ॥ अहो तू सबे
 धन्यवामासभागी । हमेंहेतु जो पुत्रभर्तार त्यागी ५९ नहीं तो-
 हिते मैं रहों दंडन्यारो । कह्योनिष्ठुरोवैन मेरो बिसारो ॥ करो
 रासभारी बनावो तयारी । प्रियेप्राणसी होसदा प्राणप्यारी ६० ॥
 दोहा ॥ योंकहिबिहँसि मुरारि तव सबहिलियो उरलाय । भईमगन
 हियगोपिका तनकीदशादुराय ६१ ॥ सोरठा ॥ हैं हरियदपि अकाम

अविनाशी अव्यक्त अज । तद्यपिभयो सकाम प्रेम विवश सर्गुण
समुभि ६२ ॥ चंचरीकछन्द ॥ इयामयों ब्रजबालिकानि अनेक
भांति प्रबोधिके । योगमायहिकोकहो इमिबैन ताकहँ सोधिके ॥
रासहेतु अनूपमंडल बेगही रचनाकरो । पायसो अनुशासने तिन
आनिके सबही धरो ६३ ॥ तोमरछन्द ॥ रचिगेह स्वच्छ स्वरूप ।
पटभूषणादि अनूप ॥ हरिके मतो मरयाद । सबही करो युतसा-
द ६४ बहु भांति बाजन वीन । सबनृत्य साज नवीन ॥ धरिआ-
इ नायउ माथ । सबभो उपस्थित नाथ ६५ ॥ तोटकछन्द ॥ त-
बलाल कहो ब्रज बालनिते । पहिरो पट आदि उतालनिते ॥
सब भूषण आदि धरो तनमें । ज्यहि जौन प्रकार फबै मनमें ॥
सुनि के पहिरी सब आभरने । इमिरास तयारि लग्गी करने ॥
शिर बार सवॉरि भरी सिंदुरें । लखिजाहि प्रभाकर ज्योतिदुरें ॥
तिन पाटिनमो गुही मोतिनको । बिंदियायुत ज्योति जगोतिनको ॥
श्रुति फूल बिराजत काननमें । शुचिके मुखराग शुभाननमें ६६ ॥
मोटनकछन्द ॥ नासा नकबेसरि सोहिरह्यो । देखे हरि जाकहँ मोहिं
रह्यो ॥ बाजूबंद बाँहु विशाल परे । मुक्ता वलिहार सुकंठ धरे ॥ पौँची
अरु छल्ल पछेलन की । शोभा सरसात हमेलन की ॥ बाजे रसना
रसही कटिको । छल्ला करपल्लव को ठटिको ६७ ॥ क० ॥ कोउ
निज अंगनि सवॉरे बेश बाला कोउ भूषण सुधारि रही मुकुर नि-
हारी है । डारिपग नूपुर सुजान भनकारे कोऊ कटिको कलाप
रही कलित सुधारी है ॥ लिये कोउ सारंगी सितार सुरसाधिर-
ही काहूसजि भूषण पकरि पिय ठारी है । काहू तिय मंडली को
मंडल सुधारे रास मंडल की या बिधिसो है रही तयारी है ६८ ॥
चौपैयाछन्द ॥ लखिलखि तिय शोभा हरिमन लोभा बोलोबिहँसि
कन्हाई । अबसब तुम प्यारी संग हमारी कीजेरास बनाई ॥ इ-
मि बैन सुनाई सबै बुझाई धरयो अनेक स्वरूपा । इकइक तिय
माहीं दै गलवाहीं नृत्यत नृत्य अनूपा ६९ ॥ दोहा ॥ सोरह स-
हस कुमारिका नखशिख अंग सवॉरि । ठाढी राहस महँ भई

हरिसन नृत्य बिचारि ॥ इकइक गोपिन मध्य में सोहत श्याम
 कन्हाय । मनु अनेक तड़ितान महँ रह्यो श्यामघनछाय ॥ ति-
 यन मंडली मध्य इमि सोहत राधा श्याम । प्रगटो मनहुं शरीर
 धरि सुखमा सहित ललाम ॥ बिहरत गोपिन मध्य में राधानंद
 कुमार । देखि रूप सुरगण छुके गव्वदूरि भोमार ७० ॥ चौपाई ॥
 मनसिज दूर करन उर गव्वा । अरु आनन्द करन सुर सर्वा ॥
 रास रच्यो इमि कुंवर कन्हाई । ब्रज युवती जनहिय सुखदाई ॥
 ऐसो कियो श्याम कछु भेखो । आपनही ढिग सब तिय देखो ॥
 गोपिन काम भाव हरि मानो । ताते तौन रूप हरिठानो ७१ ॥
 सवैया ॥ घेरिरहीं युवती चहुँ ओरते एकहि एकधरे करसाचे । बाजत
 ताल मृदंग सुदंग सुने श्रुति बाल उमंग उमाचे ॥ किंकिणि शोर
 भकोर भुजानकी पायल की खनके शुठि राचे । है मन मत्त धरे
 भुजको मधि लाडिलि लाल छमा छम नाचे ७२ ॥ नाराचछन्द ॥
 सनेसुगन्धसों समीर मन्दमन्द डोलही । पराग पूरि तो हलै प्रसून
 भांति लोलही ॥ पडंघ्रि लुब्ध चित्त मत्त है प्रसून मंडही । कला-
 पिका कलाप त्यों कहूं निकुंज छंडही ७३ बिमत्त चित्तगोपिका
 सुगीत नृत्य रचही । मृदंग चंग दुंदुभी बजाय रास नचही ॥ करी
 कपूरकीच भूमि स्वेद अंगरागते । सिहाति अष्टसिद्धिका तियान
 भूरि भागते ७४ सुरेश देव साथव्योम राजही बिमान सो । करे
 प्रसून वृष्टिका वरिष्ठ दृष्टमानसो ॥ कहूं विमान पंक्ति बांधिकिन्न-
 रादि सोहही । निहारि नृत्य रासको सुजान चित्त मोहही ७५ ॥
 क० ॥ शम्भु चढे वृषभ समेत नन्दी देखि रहे देखत विरंचि
 किये बाहन मरालको । चढे मृगरथ बिधु बाजि रथ बासवेश दे-
 खत महिष लिये पीठ दंड कालको ॥ केतिक सुजान लखे चढि
 के बिमान ऐसो कहाँलों गिनाऊं सबे बाहन विशालको । देखेसु-
 मंडल आखंडल समेत नभ मंडल में आय रास मंडल गुपाल
 को ७६ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ नचे नागरी श्याम के संगमाही । सु-
 एके भुजाते गहे एक बाही ॥ बजै किंकिणी पैजनी घुघुरारी । त-

रंगे उठे बाद्यकी मोदकारी ७७ गहे श्यामको योंकरे नृत्यबाला ।
 लगी स्वर्ण की बल्लरी ज्यों तमाला ॥ किधों दामिनी मेघ माला
 बसीहै । कि वैदुर्यमो हेम माला लसीहै ७८ इकै नागरी मध्य
 मो श्याम एके । नचे या बिधे रूप धारे अनेके ॥ कभू ताल के
 चाल में जाहि भूमे । परी रम्भनो कै कभू अंग चूमे ७९ ॥ मा-
 लिनीछन्द ॥ निरतति ब्रज बाला संगमों नन्दलाला ॥ गतिसुठि
 मुरलीते गीत गावे रसाला ॥ करि उपज कलाको तानकी सौम्य
 साजे । तिन लखि दृग शोभा चित्त कंदर्प लाजे ८० ॥ दोहा ॥
 भैरव मेघ मलार श्री माल कोस हिडोल । दीपक सहषट राग महँ
 गावतगीत अमोल ८१ मोतीदामछन्द ॥ करे इमि रास बिलास
 मुरारि । लिये संगमें सब गोपकुमारि ॥ बिलास दिवोकस नारि
 निहारि । कहैं सब धन्य अहे ब्रजनारि ८२ जिन्हें जपि शम्भु न
 पावत पार । विरंचि बखानत मानत हार ॥ रमाकुच कुंकुम मं-
 डनिहार । भुजा गहि नृत्यति रास मँभार ८३ दियो विधि बा-
 दिहि बास अकास । कहा ब्रज बास समान सुपास ॥ मनावत
 हों तुमको करतार । दिहो अबते ब्रज जन्म हमार ८४ ॥ क० ॥
 गोप गृहे दीजिये जनम करतार मेरो संचित करम पाय मानुष
 जो कीजिये । जोपै पशु रचना विचारो तो हमारो कहे नन्दजूके
 गाइन में जनम गुनीजिये ॥ कीजे जो विहंगम तो वाही वृन्दा
 विपिन के बिनती सुजान सुनि एतो यशलीजिये । दारिद बना-
 वो नीच योनि उपजावो पर ब्रज तजि वास मेरो अनतन दी-
 जिये ८५ ॥ अन्यच ॥ काह भयो पायो जो उपाधि पद अमर
 की देवन के दारा संग करिबो बिलास के । न्हाये नभगंगा के त-
 रंगनिते कहा भयो भौन लहे कहा भयो ऊरध अकास के ॥ जो
 पै हरि पासते सुजान दूरवास करि पायो ना सुपास सुख रास
 ब्रज बास के । तोपै कमलासन के खासन ते काहभयो कहा-
 भयो बसे पाक सासन के पासके ८६ ॥ दोहा ॥ धनि धनि कहि
 इमि अमर तिय बरषहिं सुमन अकास । मुदित निहारति नाक

ते राहसपति की रास ८७ ॥ मोतीदाम ॥ सुभातिअनेक इते
 ब्रजरंग । बिलासकरे ब्रज बालनिसंग ॥ कबै अलके नथ सो उर-
 भाय । तिन्हें सुरभावत है हरपाय ८८ गिरे कच खूलि प्रसून
 अपार । सुगुंधत ताकहँ बारन बार ॥ खुले बँद कंचुकि बांधेहि
 लाल । सवारहि भूषण चीर विशाल ८९ टुटे गर हार सुमोति-
 यदाम । कभू तिनको पहिरावत श्याम ॥ प्रस्वेदित बालनिगात
 निहारि । प्रमोदित पोछत ताहि सुरारि ९० ॥ दोहा ॥ ऐसे विधि
 हरिपरम सुख देत हिये बनितान । सो तिय लखि स्वाधीन पति
 उपज्यो अंकुरमान ९१ ॥ छप्पै ॥ परत प्रेम पिय बीजकुबुधि
 की परसत वारी । उपजत अंकुर मान गर्व को पिंड सँवारी ॥
 प्रसरत शारवा द्वेष कलह बहुपत्र प्रकासे । लगत पुष्प कटु बैन
 मधुप पिय जात न पासे ॥ फल होत अन्त पछितावनो अति
 दुखदा सब जीव कहँ । यहि ते सुजान जन रखत नहिं अंकुरही
 मो वृक्ष यह ९२ ॥ दोहा ॥ रूप प्रेम महँ रीझि पति रहे वश्य
 ज्यहि बाम । ताहि सुजान बखानही स्वाधिनपतिका नाम ॥
 सादोऊ इन सबन को करगत रह्यो सुजान । स्वाधिनपतिका
 होय पुनि क्यों न उठे उरमान ९३ सुग्धा स्वाधिनपतिका स
 वैया ॥ श्याम सुजान सुनो मम बैन न कीजिय याविधि की नि-
 ठुराई । देखत हो श्रमसीकर अंग अभंग कियो श्रम हौं बहुताई ॥
 सो अब दूरि रहो उतजाय करो हठ ना सँग लागि वृथाई । ना-
 चहु तो तुमहूँ कछु देर हमें ज्यहि भातिन नाच नचाई ९४ ॥ म-
 ध्यायथा ॥ श्याम सनेह हियो उमगो लखि के गुण आगरि नारि
 प्रबीनी । द्वैभुज पल्लव पंकजसे परिरम्भन को मनसा मनकीनी ॥
 त्योंहिं सुजान उधारतही लखि घूँघट लाज ते बाल नवीनी । यों
 रिसिकी रिसकी करते सिसिकी मुखते नहीं चुम्बन दीनी ९५ ॥
 प्रौढायथा क० ॥ देखत रहो जू दूरही ते आय परसोन कमल
 से कोमल बदन मुरभायगो । रसिक सुजान पिय गहो भुजगरु
 येन हरये उठावो नतो धरये पिरा पिरायगो ॥ चुम्बन चहत तो

पदज पिय चूमि लीजे चूमो ना अधर वीर मोपैना सहायगो ।
 साँवरो भुजानि गहि अंकम लगावो जिन गोरोसो बपुष मेरो साँ-
 वरो होजायगो ६६ ॥ दोहा ॥ अंजन से तुम श्याम घन बसो नैन
 ही माहिं । परसेवादिहि अपर बपु रहे स्वच्छता नाहिं ६७ ॥ सोरठा ॥
 लियो मान हरि जानि बसकरिये जानति हमें । मैं अविगति
 सुखदानि करि हों याको दूर अब ६८ ॥ दोहा ॥ श्रीपतिकी सब
 काल ते विदित अहे यह रीति । स्वीभक्त अभिमानी बने रीभक्त
 बने बिनीत ६९ ॥ क० ॥ सुख ते रहत सदासोये शेष सेज
 किये अंकम लगाये मेरे कोमल बपुषको । निरख्यो न कबहुँ नि-
 युद्ध रस क्रुद्ध भरे समर सुजान कर सारंग धनुषको ॥ लोकनि
 के नायक है रहे निर्द्वन्द्व ऐसे कैसे समुभक्त होंगे लोक सुखदुख
 को । करुणानिधान रमा ऐसो जानिमान निज पास से दुराय
 गेह राख्यो दश मुख को १०० ॥ दोहा ॥ जानि आपनो भक्त हरि
 जासों मानत हेत । करुणा करि ताको प्रथम दूर गर्व करिदेत ॥
 प्रेम स्वर्ण हिय खानि को तौलो शुद्ध न होय । जौलो विरहागि-
 नि विषय तायो जात न सोय । ऐसो हियो विचारि के राधे को
 लै सङ्ग । अन्तर्द्वान भया सपदि गोपिन ते ब्रजरंग १०१ ॥ तो-
 टक ॥ जब गोपिन नाहिं लखी हरि को । विरहागि उठो सबही
 बरि को ॥ इक एकनि साथ कहे तितहै । अबहीं हरि जाय दुरे
 कित है १०२ अबहीं सँग रासहुतो करतो । गहि पंकज पाणि
 हियो भरतो ॥ नहिं जानि परे कह चूकपरी । ज्यहिते हुव अन्तर
 ध्यान हरी १०३ बिलखाति सबै पछितात खरी ॥ वृषभानु लली
 नहिं दृष्ट परी ॥ सब जानि लई अपने मनमें । तिन ले हरि
 साथ दुरीबन में १०४ हरपाय कलू कलू के रिसिके । सब हूँढन
 ताहि चलीं दिसिके ॥ पदचीन्ह निहारति छारति छूवै । हरिनाम
 पुकारति आरति है १०५ तरुताल तमाल रसालनि ते । सब पू-
 छति बाल उतालनिते ॥ यमुना तट हूँढन कोउ चली । जल
 जात को पातनि हूँढि दली ॥ १०६ दुरते पलके पलके जिन के ।

बिधिबासर सो बिगते तिन के ॥ तजि के बन अन्तर ताहि लहे ।
 दुखमानि मतोटक लायरहे १०७ ॥ संयुता छन्द ॥ हरि लाडिली
 संग मो करे । बिचरेउते बनमो खरे ॥ कबहुं प्रसून हराकरे ।
 हरि कंठ राधहिके भरे १०८ कबहुं लली उरलावही । अभिलाष
 लाख बढावही ॥ कबहुं सुगन्ध लगावही । कचफूलमाल ब-
 नावही १०९ तकि हाव भाव कभू करे । गहि अंकमो कबहुं
 भरे ॥ यहि भांति श्याम प्रियाहिते । बतरात प्रेमनि संयु-
 ते ११० ॥ समानका छन्द ॥ देखि प्रेम श्याम को । मोद होत
 बामको ॥ राधिका मतो हयो । गर्व चित्त मो भयो १११ बाम
 गर्व यों गहे । श्याम वश्यमें रहे ॥ मोमिले हिते हरी । छन्द ये
 सबै करी ११२ मैं पिया बसो मने । ताहिते लियो सने ॥ मो
 समान कामिनी । हैन जक्त में बनी ११३ ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥
 भयोमान याको लयो श्याम जानी । दुरो ताहिते ताहुते चक्र
 पानी ॥ लखी लाडिली श्याम को संग नाहीं । भई शोक ते च-
 कृतो चित्त माहीं ११४ प्रिया दुःखते चित्त में यों विचारे । कियो
 मान ताते दुरयो प्राण प्यारे ॥ अरी बुद्धि बौरी कहाते बिचारी ।
 करीनाथ के साथते माहिं न्यारी ११५ हहा नाथ मेरो क्षमा दोष
 कीजे । दया नाथ मेरो दया दर्श दीजे ॥ न जानी कधी भूति
 भावी तिहारो । कियो मान हानाथ ताको बिसारो ११६ रही मैं
 सबी भाँति नारी अभागी । कियो आपुही नाथ मोको सभागी ॥
 हमारो कियो काज को त्याज डारो । गहे बाँह की लाज आपे
 बिचारो ११७ ॥ चंचरीक छन्द ॥ लाडिली बिलखाति सोचति
 शीश धै करयोररे । है हितू बनमें हमार मुरारि केसनजोकरे ॥
 हों परीबिछुरी पियासन कुंज ताहि मिलाय दे । श्याम के मुख
 कंजमो दृगचंचरीक लखायदे ११८ वृक्षडार आधार कै बिलखाति
 ठाढ़ि प्रियारही । आइगो ललना सबै घनश्याम खोजतही तही ॥
 देखि बाल बिहाल राधहि कंठ लाय सबै लई । पूछती चित्त
 चोर हैं कहँरी प्रिया गति काभई ११९ ॥ सोरठा ॥ निरखि सखिन

की भीर बिरह श्याम उपज्यो अधिक । लाड़िलि होय अधीर मु-
छिपरी धरणी तबै १२० ॥ दोहा ॥ देखिदशा प्यारी सबै बैठारी
गहि पानि । कहति कहै किन राधिका कहां गये सुखदानि १२१
बन्धुछन्द ॥ भाषति क्योंनहिं मोसन प्यारी । त्यागिगयो कित
कुंजबिहारी ॥ सो तुम बेगि बतावहु मोते । खोजि मिलावहि
तासन तोते १२२ नाम सुनी पिय की जब प्यारी । देखन को
विविनैन उधारी ॥ श्याम बिहीन लखी सब बाला । और उठो हिय
मों दुख ज्वाला १२३ नैन समीर मुखे बिलखानी । धै कछु धीर
कही मृदुबानी ॥ मैं अपने जिय गर्ब भुलानी । रुठिगयो त्यहि
ते दधि दानी १२४ मैं न लखी कित है चलि दीनो । मोहिं अभा
गिनि साथ न लीनो ॥ यों कहिमुछि परी पुनि प्यारी । देह दशा
सब भाँति बिसारी १२५ देखि दशा सब गोपकुमारी । राधहि
को गहि अंक बिठारी ॥ भाषति धीर हिये धरु प्यारी । धीर धरे
मिलिहे बनवारी १२६ यों कहि साथ प्रिया करि बाला । खोजन
हेतु चली नँदलाला ॥ टेरति ऊंचनि शब्द गुआली । वेगिमि-
लो बनते बनमाली १२७ आय दयानिधि दर्शन दीजे । नाथ अ-
नाथिनि की सुधिलीजे ॥ आरतवन्ति पुकारति बाला । हो तुम
आरत बन्धु गुपाला १२८ ॥ दोहा ॥ सबै दहत तव दरशबिन
बिरह बहि तन बाम । राखहु सबही दरश निज दै जीवन घन-
श्याम ॥ तप बिरहा तप ते परी तिय कैरव कुल फन्द । वरषि
तिन्हें मुसुकनि सुधा करहु मुदित ब्रज चन्द १२९ नाराचछन्द ॥
सदा समच्छ रच्छ की सुलच्छ लच्छ भाँति सों । बिपच्छ पच्छ
दच्छ ते अपच्छ कै बिभाँति सों ॥ कियो अयुक्त अच्छ क्रुद्ध भ्रष्ट
मान मानि के । तहाँ प्रतच्छ रच्छ की सबै सपच्छ जानिके १३०
पठाय कंस रच्छ बंश तच्छ जो अघादियो । बिदिर्ण कुच्छ कै तिन्हें
सबै सपच्छ रच्छियो ॥ अलक्ष्य लक्ष में सबैदियो जुरच्छि साँ-
चहू । कहाभयो अबै जुपै सुनो बिनै नराचहू १३१ ॥ सवैया ॥
कोप करी सुरराज जबै ब्रजऊपर बारिद पेलि पठायो । सो प्रभु

की निज पायनिदेश बनेमनमत गयन्द से धायो ॥ देखि दुखी
 त्यहिते ब्रजवासिन मेरु सुजान उठाय बचायो । बारकितेक स-
 हाय करी हरि क्यों यहि बारन बार लगायो १३२ ॥ कवित्त ॥
 कहापरी चूक मोते येहो यदुबीर उर देत येतोपीर जाते कुंजहि
 दुराय के । हौं तो सब दासिन तिहारे पद पंकज की अबला अ-
 भागिनी बचन मन कायके ॥ कीजिये न बेर दीन सुनिके हमारो
 टर सदाते सुजान दीन हित नाम पायके । मरन चाहति गोपी
 बिरह तिहारे अब दीनबन्धु दीजिये दरश बेगि आयके १३३ ॥
 अपरंच ॥ ब्रज के अधार दुख टारत अपार कहूँ लायो नाहंबार
 कियो बेगही सहाय के । शकट प्रलम्ब बका दुष्टन विनाश
 करि राख्यो हो कितेक बार गोपी गोप गायके ॥ बिरद बिहाय
 तौन आजु ना खबरिलेत रह्यो हो सुजान कहाँ कुंजन दुरायके ।
 मरनचहति गोपी बिरहतिहारे अब दीनबन्धु दीजिये दरश बेगि
 आयके १३४ ॥ हरिगीतछन्द ॥ घनश्यामलोक अभिरामनाम अ-
 नन्त विश्वरूपाकरं । गोपाल गोपतिपाल गोप्रतिपाल परमे-
 श्वरपरं ॥ आनन्दकन्द मुकुन्द नन्द अनन्दचित्त विवर्द्धनं ।
 अरविन्द लोचन चन्द्रमास्य विलास धाम नमाम्यहं १३५ ॥ श्री
 रास रंग निवास ब्रजपति प्राणपति परमामयं । दुख ध्वंशकर ब्र-
 ज वंश भूषण विश्वरूप गिरामयं ॥ ब्रषभानुजाबदनाब्ज भृंगअनंग
 कोटि प्रभालयं । कुरुकृपा कृष्णकृपाल दीनदयाल परमेश्वरस्वयं
 १३६ ॥ उरगर्वभो अतिस्वर्ब सर्व निरीच्छ स्वच्छ हिते प्रभो । अटवी
 बिहाय सुबाल अन्तर्द्वानि कान्हभयो विभो ॥ तव रहित प्राण
 पयान इच्छत कुरुकृपा करुणायते । आधार प्राणाधार विश्वअ-
 धार गोवर्धन धृते १३७ ॥ बालाछन्द ॥ नाथकीजे दयादासि जा-
 नी । हौंसबै भाँतिबाला अयानी ॥ त्याग कीन्हो सबैकाह मानी ।
 दीजिये दर्शनो चक्रपानी १३८ मैं नहीं जानती भेवतेरो । होप्र-
 भो ईशतू जककेरो ॥ रावरे भूति भावी भुलानी । दीजिये दर्शनो
 चक्रपानी १३९ हौतुही एकसंसार कर्ता । मध्य संस्थिति औअन्त

हर्ता ॥ वेदवेदज्ञ ऐसो बखानी । दीजिये दर्शनो चक्रपानी १४०
 अव्य अव्यक्त आदी अनादी । त्यक्तअत्यक्त बादी अबादी ॥ बादि
 मैं नन्द को पुत्र जानी । दीजिये दर्शनो चक्रपानी १४१ मैंहरीअ-
 ज्ञदोषज्ञस्वामी । मैं सकामी प्रभोतू अकामी ॥ ऐसहू भांति नातेहि
 मानी । दीजिये दर्शनो चक्रपानी १४२ ॥ सोरठा ॥ ऐसे गोपकुमा-
 रि व्याकुल बिलपति विपिन महँ । हेमुरारि बनवारि कबहुंकटेरि
 उठति सबै १४३ ॥ दोहा ॥ जड़चेतन की सुधि नहीं नहिँ उत्तर
 की कानि । बावरि सी पूछति फिरति बनतरु अरु लतिका-
 नि १४४ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ सदा से कन्हाई रहें साथतेरो ।
 तुम्हेंप्रीतिहै नीय तासों घनेरो ॥ अहौ पूछती ज्वाब दीजो हमारे ।
 इते ह्वैगये हैं भला नन्द बारे १४५ अहो श्याम के रंग धारे तमा-
 ला । तुहीं भावते चित्त मेरे गुपाला । बरोकंठमें गुंजमाला सुधा-
 रे । इते ह्वैगये हैं भला नन्दबारे १४६ करै मालती हार तेरो क-
 न्हाई । रहे मोद तोते तिन्हें कंठ लाई ॥ कसेकाछनी बाँसुरीपा-
 णिधारे । इतैह्वैगये हैं भला नन्दबारे १४७ सुनीहै बडाई तिहा-
 री निवारी । कितू भावती चित्त मेरे बिहारी ॥ कहोना कहूं अंग
 आछे सँवारे । इते ह्वै गये हैं भला नन्दबारे १४८ रहे सेवती से-
 वती प्राणप्यारो । भयो सेवती नाम ताते तिहारो ॥ सुगन्धादि
 श्रीखंडते अंगभारे । इतै ह्वैगयेहैं भला नन्दबारे १४९ हितूजानि
 जो वे तुम्हें बीर वृन्दा । रहे शीश पै तू चढेही गुविन्दा ॥ करे
 शीश पै मोर के पिच्छवारे । इते ह्वैगये हैं भला नन्दबारे १५०
 हरे तू सदा शोक संघात लोके । पुकारे सबै नाम ताते अशोके ॥
 भुजंगप्रिया तादृशो केश कारे । इते ह्वैगयेहैं भला नन्दबारे १५१
 छप्पै ॥ हे रसाल तरुताल शाल कहु लाल निहारयो । श्रीफल
 कदलि लवंग लकुचकहुँ देखेउ प्यारयो ॥ हे मन्दार उदार अहो
 कचनार कुन्दबट । पिप्पल देख्यो जात इते मारग नागरनट ॥
 हे पनसखीर कमरख सिरस गुल्म लताबनबेलिगन । कोउ ल-
 ख्यो जात तो कहहु इत गयो किते यशुदा सुवन १५२ ॥ पुनः॥

हे सारंग सुजान अहे तव चपल नैनवर ॥ लख्यो गैल इतजात
 कहूँ नटनागर सुन्दर ॥ अहो ऋक्ष वृककीश शशा शूकर शृगाल
 गन । कुंजर करभतरच्छ कहोकहुँ लख्यो दयामघन ॥ तुमरख्यो
 नाम हरि आपनो रहत भूपसम सकल बन । मृगराज कहो दृग आज
 कहूँ लख्यो जात यशुदा सुवन १५३ ॥ सवैया ॥ ढूँढि थकी सिंगरे
 दिशि धाय सुबैन सबै विधि दीन उचारी । त्योंहि सुजान सुनाय
 थकी सिंगरे जड़ चेतन को दुखभारी ॥ काजकियो न कोऊ हमरो
 नहिं आपुहु आय मिलो गिरिधारी । सो अब दयाम मिलाइबे को
 बसुधे हियमो रह्यो आश तिहारी १५४ ॥ दोहा ॥ कहियतहै सर्वत्र
 गति तुम्हरो मीत समीर । जाय कहो किन मो व्यथा जहां अहे
 यदुबीर १५५ यहिविधि ढूँढत मिलेउ नहिं बस्यो दुरन्तर दयाम ।
 लख्यो बिरह दुखदेन लखि प्रोषितपतिका बाम १५६ ॥ मुग्धाप्रो-
 पिता प्रलाप ॥ कवित ॥ चन्दना चलत रथ चंद्रिका न छोड़े
 पथ छपा छपि गरल तरैया उगिलत है । परसे समीर पीर होत
 है शरीर वीर चन्दन छुआये अंग अनल जगत है ॥ हुतो जोसदा
 को हितू भूषण बसन मेरो आजुधौं सुजान सोऊ तीरसो खगत
 है । कहा धौं भयो है आली बिना बनमाली आजु सुखदसबै
 हू लखे दुखद लगत है १५७ ॥ मध्या यथा सवैया ॥ आज सबै
 बन बाग विशाल अहे उरशालत शाल सो आली । शीतल मंद
 समीर सुजान लगे तनमें दुखहोत बहाली ॥ का कहिये कहिजात
 नलाजन है तुमरो हिय रीत निराली । त्यागि कलेवर क्योंन दुर्यो
 जबहीं तजि साथ दुर्यो बनमाली १५८ ॥ प्रौढाप्रोपिता प्रलाप ॥
 सवैया ॥ बूढ़ि मरे न समुद्रहि में पुनि का मुख ले नभमाहँ वि-
 हारे । है तुमरो धृग जीवन को बिरही अबला गनपै शरमारे ॥
 आप तो लीन्ह कलंकहु तो सुकलंक सुजान दियो पितु भारे ।
 बाँधि मथाय पियो गयोबारिधि केवलही बिधु पाप तिहारे १५९ ॥
 दोहा ॥ छीन कला सुरभान मख नीच छार निधि बास । बादि
 तुम्हें बड़ को कहे ऊंचो चढ़े अकास १६० ॥ परकीयायथासवैया ॥

कानि करी गुरु लोगन की नहिं भाँति अनेक तिन्हें समुझायो ।
 त्यों सहि के अपमान सुजान सदा निशिबासर प्रेम बढ़ायो ॥
 सोन कियो हरि नेकु बिचार हमें हक नाहक संग दुरायो । हाय
 भटू यह सत्य है आपने अन्त न होतहै कन्त परायो १६१॥दोहा॥
 तजी गेह अरु नेह तजितजी पतीव्रत चीन्ह । इन्हें हेतु हम सब
 तजी इन हमहीं तजि दीन्ह १६२ ॥ सोरठा ॥ सो अब कहा ब-
 साय कहा होय मेरे किये । करें जौन जिय आय है सबही कछु
 हाथ तिन्ह १६३॥चौपाई॥ सुनि बोली इक गोप कुमारी । अहे सत्य
 सब हाथ बिहारी ॥ देखहु हरि प्रकटे ब्रज जबते । आयो देत सबै
 सुख तबते ॥ पै या विधि को चित्त कठोरा । कियो न कबहुं नन्द-
 किशोरा ॥ दोष कियो हमहीं सब भारी । कियो मान जो सहित
 मुरारी ॥ बिषकी बीजहि बोवे जैसे । अमृत फल सो पावे कैसे॥
 अहे विदित यह लोकनि माहीं । गर्व गुविन्दहि भावत नाहीं १६४॥
 दोहा ॥ अहो श्याम यद्यपि कियो तुमसन औगुन आय । तदपि
 दयानिधि नाम गुनि दर्शहु ताहि दुराय ॥ ऐसे विधि चहुंदिशि
 फिरे खोजति हरिकहैं बाम । कबहुं देत हिय दोष निज कबहुं क
 दोषति श्याम १६५ ॥ गीतिका छन्द ॥ यह हाल बालनिकी लखे
 हरि ओटदे दृगनारिको । अति हर्षहोत हियो निहारि तियान प्रेम
 मुरारिको ॥ जिन सर्वदा कर संग बासिनि भावती प्रिय पानते ।
 किमि के मुरारि तिन्हें बिहाय रहे सुदूरि तियानते १६६ जिमि
 डीठबन्द लगाय के नट साथहीसबके रहे । निज संग नारि बकारि
 को त्यहिभाँति कोउ नाहीं लहे ॥ करही लला जउ हाँस पै बिनु
 श्याम बाम हियो दहे । बिलखाय बाल पिराय हाय सुनाय आ-
 पुस यों कहे १६७ ॥ तारक छन्द ॥ सजनी सुनु वे प्रभु अन्तर-
 यामी । जगकारन दुःख बिदारन स्वामी ॥ सुर सिद्ध समाज
 लिये सुरराई । सब खोजि तिन्हें कोउ पारनपाई १६८ हमतो
 अबला सब भाँति अनारी । किमि खोजत पावहिं कुंजबिहारी ॥
 अब एक उपाय मतो ममआवे । इमिके करिये यदिके हियभावे १६९

पुनिके उतही चलिये सब ग्वाली । जहँ ते तजि कुंज दुख्यो बन-
 माली ॥ तहँ ते हरिको दुख टेरि सुनावे । प्रभु दीनदयाल न बार
 लगावे १७० यह कीन्हेउ जो नहिं दर्शन दैहे । विरदावलि नाम
 बिहाय जुरैहे ॥ यमुना महँ तो तजि के यह काया । मिलिहो
 सुख ते सँग में यदुराया १७१ सब नारि हियो यह बात बिचारी ।
 तिन रासहि ठाव गई मन मारी ॥ हरि को चरिते करने सब
 लागी । सब की सुधि देह दशा कर भागी १७२ ॥ दोहा ॥ हरि
 लीला को स्वांग सब लगी करन तहँ बाम । बनी यशोमति
 नन्द कोउ बनीकोऊ घनश्याम ॥ लगी करन दधि दानकी कोउ
 तिय चरित पुनीत । गैल रोकि बनि श्याम इमि बोली बैन विनी-
 त १७३ ॥ लक्ष्मीछन्द ॥ आवती जाति हो गैल याही सबै । दान मेरो
 हमें देत नाही कबै ॥ आज मैं दान लेहौं सबै दोसको । दीन्ह बीने नहीं
 दान जाने सको १७४ श्याम याभांति सों बैन बोलो जबै । ना-
 गरी ज्वाब देती भई यों तबै ॥ कंस को राज्य जाने सबै लाडि-
 लो । मैं जान्यो तुम्हें राज कैसे मिलो १७५ बाप कांधे सदा
 कामरी को धरे । चारते धेनुआकुंज दौरों करे ॥ पूतले राजधानी
 करे राजको । बात आश्चर्यये मैं सुनी आज को १७६ बालबो-
 लीं सबै यों जबै बैन को । रोष कै श्याम भाष्यो सखा सैनको ॥
 लेहु याको दही छीन बेगे सबै । देखिये आय रक्षा करे को अबै
 १७७ बाल दौरों जबै छीनिबेको दही । याद आयो सखा श्याम
 ह्यां हैं नही ॥ मूर्च्छि भूपै गिरीं सुद्धि सबै हई । कीट भृंगी इवो
 आपु गोपी भई १७८ ॥ दोहा ॥ रह्यो न कछु अन्तर हियो भई
 श्यामइव बाम । ताहीमधि करुणा सदन प्रगट भये तहँ श्याम ॥
 निरखि प्रगट नंदलालको उमग्यो तियन अनन्द । सो सब सुख
 किमि कहि सके कवि सुजान मतिमन्द १७९ ॥ कवित्त ॥ कुंड-
 लश्रवण धरे पीत पट कटि भरे सोहत सुभग उर गुंजमाल दाम
 सो । पाणि महँ बांसुरी मयूर पच्छ शीश धरे चलत मराल बाल
 सरिस ललाम सो ॥ देखि इमि मोहन को प्रकट सुजान बाम

बिरह बिहाय हिय भाव भरे कामसो । सहित सनेह मिलीं का-
मिनी यों कान्हर सो मिली दीह दामिनी ज्यों दौरि घनश्याम
सो १८० ॥ अन्यच ॥ चन्द्रावलि चम्पक चमेली चारु चित्रमुखी
वेल्लासी बिशाखा शिला स्वर्णजा सरिस हैं । मालती सी प्रमदा
निवारी सी अनन्दा गुलदावदी गोविन्दा कामा राजति अतिस
है ॥ कुन्दसी कलिन्दी लता ललिता लवंग किसी माधवीसी
कुमुदा सुजान बिसे बिसहै । रुचिरासे राधे लखि कान्ह कल्प
पादपसी ललना लतासी लपटानी चहुँदिस है १८१ ॥ मो-
तीद्वाम ॥ लखी हरिको तिय होय निहाल । मिली अतिआ-
तुर ते नँदलाल ॥ रही मुख देखि कोऊ इक बाल । शृंगारति
अंग कोऊ नँदलाल १८२ गहे हरिकंध भई इकठारि । इके पद
श्याम रही उरधारि ॥ सबै कहँ याबिधि श्याम निहारि । विहाय
हरी प्रभुता रह्यो हारि १८३ कह्यो सबते मुसुकाय गुपाल । कियो
हम ये सब हांसनि ख्याल ॥ सुजान रही कतहोय बिहाल । तुहो
सब प्राण प्रिया सुख जाल १८४ सुने तिय लालन को मृदुबात ।
प्रमोदित होय हियो सकुचात ॥ सबै कहँ साध मतो अवदात ॥
सुपूरि कियो हरि आनँद गात १८५ ॥ दोहा ॥ भयो मगन हिय
नागरिन लखि हरि पति अनुकूल । पूछति भई बिहँसि तबै प्रीति
रीति सुख मूल ॥ उत्तम मध्यम अधम पुनि प्रीति तीन बिधि
जोय । कहहु भेद तिनको प्रभो जानन चाहति सोय १८६ ॥ प-
द्वरी छन्द ॥ सुनि बिहँसि कह्यो मृदुबैन श्याम । तुमसबमों प्राण
प्रियामुदाम ॥ सब जानति यद्यपि प्रीति भाव । तउ पूछति ताहि
सुनो प्रभाव १८७ स्वारथबश प्रीतिकरे जु कोय । बुधकहत अधम
है प्रीति सोय ॥ दुहुँ ओर परस्पर प्रीति पाय । मध्यम त्यहिभा-
षत सब बताय १८८ अनयास हिये उपजे जुप्रेम । नहिं रहेजा-
हि उर कलुक नेम ॥ अन्तरहिय पात्र परे न कोय । सबजानहु
उत्तम प्रीति सोय १८९ किय प्रीति समय ममसन जुआय ।
उपमा त्यहि मोहिं कहो न जाय ॥ उपकार करो तुम प्रति जु

लच्छ । नहिं उरिण तऊ तुमरे समच्छ १६० हो धन्य सबै तुम
 तिय समाज । मम हेतु तजी गृह लोक लाज ॥ हिय माहँ सबै
 पदधारि हमार । तृणसों पितुमातु दई बिसार १६१ ॥ दोहा ॥
 कियो न कछु उपकार मैं उलटे किय अपकार । सो दुख हियते
 दूरि करि राचहु रास उदार १६२ ॥ सोरठा ॥ सुनि तिय गण
 सुख पाय हँसि हँसि लाये हरिहि उर । तनकी ताप दुराय बहुरि
 रास रस शुचि ठई १६३ ॥ कवित्त ॥ वैसही बिलास रास बहुरिहु-
 लास रच्यो हाव भाव सजो सब वैसही विधान को । गोपीगण
 मंडली बिराजी रासमंडल मों वैसही अलाप चहुँओर उठो गान
 को ॥ वैसही सुजान जोरी जुरी मध्य युगल की व्योम सो वि-
 राज्यो वृन्द वैसही बिमान को । वैसही त्रिविध पौन कीन्होमंदमंद
 गौन मान इक वैसही भयो न बनितानको १६४ ॥ अनुकूलछन्द ॥ या
 बिधिते बालनि हरिसंगा । भाव लिये राचहि रसरंगा ॥ देखत ताको
 हरि सुखपावे । प्रेम हियेकै उरहि लगावे १६५ बाँसुरि धारे अधर
 बिहारी । गावत है गीतहि सुखकारी ॥ सोहति बंशी हरि मुख
 ऐसे । भूपति के लोकहि वस जैसे १६६ बैठि सिंहासन पाणि
 बिराजे । चामर ज्यों कुंतल छबिछाजे ॥ बोलत बन्दी अलिपिक
 नाना । काम प्रशंसा करत सुजाना १६७ नारिन आन्यो मनुरण
 जीते । बंधि सबैकहँ सरसुरहीते ॥ बोलत जै जै सुर हिय फूले ।
 देखि सबै आपन अनुकूले १६८ ॥ दोहा ॥ नृत्यत हरि युवतिन
 सहित करि अनेक रसरीत । रह्यो बालगण अरुभि मन लखि
 गति मोहन मीत १६९ ॥ कवित्त ॥ कुंतलते कुण्डल अलक नक-
 बेसरि सो रह्यो पीत बसन अरुभि तिय सारीसो । हारबन्द कं-
 चुकी हमेल केशपासपाय अरुभो कलाप कटि काछनी मुरारी
 सो ॥ आननते लोचन अरुभयो गरबाहुनते अरुभि सुजान रह्यो
 प्रेम पिय प्यारीसो । ख्यालनि सबैको मन तालनि अरुभि रह्यो
 बालनि अरुभि रह्यो बाँकुरो बिहारीसो २०० ॥ दोहा ॥ तबै सबै
 ब्रज सुन्दरिन भरे परम उत्साह । हरि दूलह सँगमें रची दुलहिनि

राधा व्याह ॥ अति पुनीत यमुना पुलिन वेदी रची अनूप । सोधि
 घरी शुभ कीन्ह सब मंगल व्याह सरूप २०१ ॥ भुजंगप्रयात ॥
 धरी मोरकी पिच्छकी मोर माथे । बराती सजी काम की सैन
 साथे ॥ धरेकंठमो गुंजमाला विराजे । सुनासीर धन्वा लखेजाहि
 लाजे २०२ कसै काछनी पीत सम्ब्यान सोहै । मनो मेघदम्पा धरो
 अंकमोहै ॥ लखे मोद है चितकेका किलोले । कहूँ कोकिला को-
 किला कंठ बोले २०३ खड़े व्योमते व्योमगामी निहारे । करे
 पुष्पकी वृष्टि जै जै उचारे ॥ नचे किन्नरादी सुवादी सुनावे । सुरी
 बाँसुरी लेकहूँ गीत गावे २०४ करी व्याहकी नाहकीयों तयारी ।
 सबै नागरी नागरी किर्तिवारी ॥ विधाता पढ़े व्योमते वेदबानी ।
 फिरावें लली भावैरी देवरानी २०५ चहूँ ओरते षोडशायुत गोरी ।
 सजे मध्य में लाड़िली लाल जोरी ॥ करे मंगलाचार गारी सु-
 नावें । चिरंजीव जोरी रहे गीत गावें २०६ ॥ आशीर्वादकवित्त ॥
 दिनदिन दूनोदूनो दोउन में नेह लहे आनँद सो ब्रजमें बिहार
 उमहा करे । रूपके उजारे गुणवारे प्राणप्यारे दोऊ नैनन हमारो
 चैन निरखि लहा करे ॥ मंगल मनावती सदाही देवि मंगलाते
 विनती सुजान सुनि मंगल महा करे । कीरति किशोरी संग का-
 न्हरकी जोरी नित नेहनि अथोरी सदा अचल रहा करे २०७ ॥
 दोहा ॥ तबै सखी इक नन्द बनि बनी एक वृषभान । अविहित
 महर मिले दोऊ लोक विधान सुजान २०८ ॥ चित्रपदाछन्द ॥
 जोरि पाणि बिनय कियो वृषभानुज नँदरायको । आजदेव सनाथ
 भो समधी तुम्हें निज पायको ॥ मैं नहीं तुमरो बराबर मोहिं
 आपु कृपाकरी । लोकको शिरमौरता शिरमौर मोर गृहेधरी २०९
 नन्दजु सुनि है अनन्द विनीत बैन तबै कह्यो । धन्य भाग हमार
 आपु समान जो हित कै लह्यो ॥ वंशको अवतंश आपु प्रशंश
 लोकनि गाइये । आपसो गुण सिन्धु को सनबन्ध भाग्यनि पाइ-
 ये २१० ॥ दोहा ॥ ऐसे बिनय सुनाय दोउ नये दुहूँ दुहूँ शीश ॥
 आनँद छाय रह्यो सबै निरखि व्याह ब्रज ईश २११ सदा निरीह

निरुक्ति प्रभु जे निसंग निरद्वन्द ॥ सो बिलसत ब्रज तियन संग
 परे प्रेमके फन्द २१२ ॥ सवैया ॥ हारि गये निशि बासर जाहि
 पंचाननहू हियध्यान न धारी । गाननकै चतुराननहू थक्यो खोजि
 षडानन हू गये हारी ॥ जाहि जपै सहसानन नित्य सुजान रहै
 तिन नेति पुकारी । आज सोई ब्रजराज लिये बनमांझ बिहारति
 गोपकुमारी २१३ ॥ इलोक ॥ यत्पादपंकजमहर्निशमादरेण ध्याय-
 न्तियोगसमाधिरतामुनन्दिना ॥ नित्यं विलासतिसवल्लववल्लभत्ते
 वृन्दावनेश्रुतिविमृग्यपदामुकुन्दः २१४ ॥ चौपाई ॥ यहि विधि
 हरि विलसत विधि नाना । करत मुदित हिय तियन सुजाना ॥
 रही किये ज्यहि विधि उरसाधा । पुरयो तौन रचिरास अगाधा २१५
 है हरिकी यह रीति सदाई । करत मनोरथ पूरण सांई ॥ काम
 भावकरि तियगण ध्यायो । ताते तौन भावकरि पायो २१६ करि
 के सुखद रौनि षटमासा । पुरयो तियगण सकल हुलासा ॥ तिय
 हिय चोप इकउ नहिं राखा । श्री शुकदेव भागवत भाखा २१७
 वेदऋचा सब गोपकुमारी । नहीं एकक्षण हरिते न्यारी ॥ लेत
 हरिहि अवतार निहारी । रहन संगहित सब तन धारी २१८ सो
 ब्रज आइ करी रसलीला । सन्तन मुक्ति हेतु सुख शीला ॥ गा-
 वत सुनत सप्रेम जु कोई । अवशि मिलत ब्रजपति से सोई ॥
 २१९ ॥ दोहा ॥ करि रस रास बिलास हरि तियगण आश पुराय ।
 यमुना जल क्रीड़न चल्यो श्रमित निहारि कन्हाय २२० ॥ सुंद-
 री छन्द ॥ लैसन में सबही ब्रजबालन । भानुसुता जल क्रीड़त
 लालन ॥ ज्यों इभमत्त लिये करिनागन । मोदित चित्त बिहा-
 रत है बन २२१ दुष्ट निकन्दन त्यों नँदनन्दन । बारि बिहारकरे
 अति छन्दन ॥ धै कबहुं हरि को ब्रजसुन्दरि । बारि उछारति डा-
 रति है हरि २२२ कोउ कटीतट बारि बिराजति । श्याम प्रबेष्ट
 गहे सुख साजति ॥ वारि अथाह लिये कोउ श्यामहि । रूपछटा
 तिय जाति सकामहि २२३ बालनिकी छुटि सिन्दुर भालनि ।
 कुंकुम चन्दनगात विशालनि ॥ भौ यमुना जल रंग बिरंगनि ।

क्षण सा

तिय आश पुराई । गृह जानाहत
तजी गृह लोग लुगाई । तुम प्राणप्रिया समहा सुखदा
बहुभांति दुई सुखमो सबकाहू । अब मानि हमार कहो गृहजाहू
करिचित्त सबैतिय वृन्द उछाहू । रहिये गृह कै कुलरीतिनिब
२२६ ललना गन लालन की सुनिबाता । करजोरि कही सुनि
जगत्राता ॥ तुमहो सुखकारक तारक मेरो । कित जाय सबैत-
जिके पद तेरो २३० परनाथ कह्यो बचमानि तिहारो । गृहजात
विनै यह अन्त हमारो ॥ अपनो गुनि दीन हमें प्रभु दासी । सुधि
सन्तत मोर रहे अबिनासी २३१ ॥ सोरठा ॥ ऐसो बिनयसुनाय
मिलीं परस्पर श्याम सन । चलीं हिये हरषाय हिये गुनत राहस
रहस २३२ ॥ चौपाई ॥ गई सदन सब गोपकुमारी । हिये रूप
धरि कुंज बिहारी ॥ जाय गेह सब सोवत पाये । हिये सबै आ-
नन्द बढ़ाये २३३ कियो मतो इमि हरि सुखदानी । सब निज
पास हरिहि अनुमानी ॥ भयोभोर सब बृज जन जागे । निज निज
कारज में अनुरागे २३४ ॥ दोहा ॥ यहि औसर बासवलिये वृंदा-
रकन समाज । आयलगो अस्तुति करन जहां हुते ब्रजराज २३५ ॥
तोटकछंद ॥ जय ब्रह्म सनातन जकूपते । करुणाकर कृष्ण उदार
मते ॥ परि पूरण माधव ब्रह्मस्वयं । वृषभानु सुतापति ज्ञानमयं
२३६ अनु अंश कला बिकला सहिते । अवबेश सु पूरण रूप

भोर किया चान्द्र

इति श्रीमद्राधाकृष्णविहारविषये कृष्णाप्रयकावसु
विरचिते रहस्यचन्द्रिकाग्रंथप्रकाशसमाप्तः ॥

जुज १ वर्क ६